B.A Part One
Paper IInd
Sub- economics

By- Dr. Shaifali Kumari
dept. of economics
Raja Singh College Siwan

4.6.20

चक्रीय प्रवाह के महत्व :— (Importance of the circular flow)

—चक्रीय प्रवाह के विश्लेषण के में निम्नलिखित महत्व पाये जाते हैं।

(1) अर्थव्यवस्था का कार्यकरण (working of the economy) चक्रीय प्रवाह की धारणा अर्थव्यवस्था का पूर्ण स्पष्ट रूप प्रस्तुत करती है। इसमें हम जान सकते हैं कि अर्थव्यवस्था क्षमतापूर्वक कार्य कर रही है या नहीं और कि उसके सुचारु रूप से कार्यकरण में कोई गड़बड़ी तो नहीं है।

(2) असंतुलन की समस्याओं का अध्ययन — Study of problems of disequilibrium) चक्रीय प्रवाह की सहायता से ही असंतुलन की समस्याओं और संतुलन के पुनः स्थापन की समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।

(3) रिसावों और अन्तःप्रवाहों का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव — effect of leakages and inflows on economy) रिसावों के कार्य भाग से हम राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभावों का अध्ययन कर सकते हैं। उदाहरणार्थ जितने आयात हैं वे आय के चक्रीय प्रवाह से रिसाव हैं। यदि अन्तः प्रवाहों से रिसाव अधिक हों तो उत्पादन की अपेक्षा कुल व्यय कम रह जायेगा। जिसके परिणामस्वरूप कुछ समय बाद आय तथा रोजगार गिर जायेंगे।

(4) उत्पादकों और उपभोक्ता के बीच संबंध (Link between producer and consumers) मुद्रा का चक्रीय प्रवाह उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं के बीच एक संबंध स्थापित करता है। मुद्रा ही वह साधन है जिसके जरिए उत्पादक उत्पादन के साधनों की सेवाएं खरीदता है, और इसके बदले उत्पादन के साधन उत्पादकों से वस्तुएं खरीदते हैं।

(5) बाजारों के जाल का सृजन (Create a network of market) उत्पादक और उपभोक्ता के संबंधों से मुद्रा के 17
उपरोक्त तथ्य के परिणामस्वरूप उत्पादक और सेवाओं के लिए बाजारों का
चक्रीय प्रवाह के जरिए विभिन्न वस्तुएं और बिक्री और खरीद की समस्याएं अपने
जाल बिछ गया है जिससे उनकी
आप सुलझ जाती हैं।

P.T.O.

Scanned by CamScanner

(6) स्फीतिकर एवं अवस्फीतिकर प्रवृतियाँ (inflationary and deflationary tendencies) मुद्रा के चक्रीय प्रवाह में निकास अथवा अन्तर्वाह अर्थ-व्यवस्था के सुचारू रूप में बाधा आते हैं। उदाहरण के लिए बचत-व्यय प्रवाह में से एक निकास है। यदि बचत में वृद्धि होती है तो इससे मुद्रा के चक्रीय प्रवाह में कमी आ जाती है अर्थव्यवस्था में मुद्रा की आपूर्ति करने पर रोजगार आय और कीमतों में कमी आ जाती है इससे अर्थव्यवस्था में अवस्फीति प्रक्रिया उत्पन्न हो जाती है, दूसरी ओर उपभोग, व्यय और निवेश आय के चक्रीय प्रवाह में अन्तर्वाह है, और इससे रोजगार, आय, उत्पादन और किमतों में वृद्धि होती है तथा स्फीतिकर में बढ़ावा मिलता है।

(7) गुणक का आधार (Basis of multiplier) इसके अलावा यदि आय के चक्रीय प्रवाह में निकास, अन्तर्वाह से अधिक हो जाते हैं तो कुल मुद्रा आपूर्ति कुल उत्पादन से कम हो जाती है।

(8) मौद्रिक नीति का महत्व (importance of monatory policy) आय के चक्रीय प्रवाह के अध्ययन से बचत और निवेश की बराबरी लाने में मौद्रिक नीति के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है।

(9) राजस्व नीति का महत्व (importance of revenew policy)

आय का राष्ट्रीय प्रवाह राजकोषीय नीति के महत्व के बारे में भी उल्लेख करता है। आय के चक्रीय प्रवाह के संतुलन में होने के लिए बचत और कर (S+T) का योग, निवेश और सरकारी व्यय के बराबर होना चाहिए।

(10) व्यापार नीति का महत्व (importance of trade policy) आयात आय के चक्रीय प्रवाह में निकास है, क्योंकि ये विदेशों को किए गए भुगतान हैं। इसे रोकने के लिए सरकार ऐसे उपाय अपनाती हैं जिनसे निर्यात बढ़े और आयात कम हों। इस प्रकार आय का चक्रीय प्रवाह निर्यात प्रोत्साहन और आयात नियंत्रण नीतियाँ अपनाने पर प्रकाश डालता है।

(11) राष्ट्रीय लेखांकन का आधार (Basis of national income account)
आय का चक्रीय प्रवाह राष्ट्रीय आय के लेखांकन में सहायक है। राष्ट्रीय आय प्रवाह अर्थ व्यवस्था में सभी प्रकार के लेखांकन में सहायक है। राष्ट्रीय आय प्रवाह अर्थ व्यवस्था में सभी प्रकार के लेन-देनों से संबंधित है जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्तियों और भुगतानों द्वारा दिखाया जाता है।

Scanned by CamScanner